डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का जातिवाद मुक्त भारत

प्रदीप निवृत्ती बेनके शोध छात्र शिवाजी यूनिवर्सिटी, कोल्हापुर मो. नं – 9921982153

ईमेल - pradeepbenake19@gmail.com

सार

डॉ. बी. आर. आंबेडकर एक विद्वान, संविधान निर्माता करनेवाले समाज सुधारक और न्यायप्रविष्ठ इन सबको प्रेरित करनेवाले महान नेता थे। इसी वजह से उन्हें महामानव कहते हैं। उन्होंने भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही जातिवाद को समाप्त करने के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित करना पड़ा। डॉ. बी. आर. आंबेडकर एक संविधान निर्माता के साथ साथ समाज में व्याप्त जातियवाद (छुआ छुत) जैसे सामाजिक बुराइयों को समाप्त कैसे कर सकते है इस पर चर्चा की जायेगी। डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी ने अपने लेखन और कानूनी कार्यों के माध्यम से समता और मानवाधिकारों के लिए अपना योगदान दिया। इस शोध पत्र में डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी के जातीय व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष, उनके द्वारा किए गए सत्याग्रह, संविधान निर्माण और उनके विचार इस विषय पर सविस्तर चर्चा की जायेगी।

बीज शब्द : जाती, धर्म, संविधान, अस्पृश्य

1) डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी का जीवन काल और संघर्ष डॉ. भीमराव आंबेडकरजी का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के महू गाव मे हुआ था। उनके पिताजी रामजी मालोजी सकपाल एक सैन्य अधिकारी थे और उनकी मां रमाबाई एक गृहिणी थी। डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी एक महार परिवार से थे, जो हिंदू धर्म में निम्न जाती है। आंबेडकर जी का बचपन कठिनाइयों से भरा हुआ था। उन्हें जातीय व्यवस्था के कारण भेदभाव का सामना करना पडा। उन्होंने अपने पिताजी की मदत से अपनी पढ़ाई जारी रखी। उन्होंने 1912 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद उन्होंने भारत आकर अपने देश की सेवा करने का निर्णय लिया। यहाँ उन्होंने दलितों पर होने वाले अन्याय, अत्याचार को समाप्त करने के लिए बहुत बड़ा संघर्ष किया और सत्याग्रह भी कि ये। दलितों को न्याय देने में वह सक्षम रहे। किसी लिए डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी को दलितों का मसीहा भी कहा जाता है। उन्होंने भारत देश का संविधान लिखते समय कि सी भी जाती, धर्म, वर्ग, पंथ पर अन्याय नहीं होने दिया। संविधान में भारत के हर एक नागरिक को स्वतंत्रता है। डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी ने पहले शिक्षा को ही महत्व दिया। उन्होंने देशवासियों के लिए शिक्षित बनो, संघटित रहो और संघर्ष करो यह बताया था।

2) डॉ. बी आर आंबेडकर जी का समाज के लिए संघर्ष :

डॉ. बी. आर. आंबेडकर ने अपने संघर्ष की शुरवात अपनी पढ़ाई पूरी करके भारत में आकर कि थी। जब बाबासाहेब भारत में आए तो उन्होंने देखा की यहाँ दलित वर्ग पर अन्याय और अत्याचार हो रहे थे। इसको समाप्त करने के लिए उन्होंने अपना योगदान दिया। उन्होंने दलित वर्ग के लोगों के लिए स्कूल और कॉलेज खोले ताकी वह लोग भी शिक्षित हो सके प्रशिक्षित हो जाने के बाद संघर्ष करके अपना अधिकार मांगे। उन्होंने समाज को यह बता दिया कि आप शिक्षित बनो, संघर्ष करो। डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी ने जो आंदोलन और संघर्ष किए थे। वह सब अपनी शिक्षा के माध्यम से ही कि ये। डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी ने अस्पृष्यों के लिए कई सारे आंदोलन किए। जिसमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं।

A) महाड सत्याग्रह:

महाराष्ट्र में महाड सत्याग्रह डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी ने उनके अनुयायी के साथ तालाब से पानी पीकर दलितों को इंसान का दर्जा दिलाया । उस समय आंबेडकर और उनके अनुयायी महाड के तालाब से पानी पीने का अधिकार मांग रहे थे, जो केवल उस समय उच्च जाति यों के लिए आरक्षित था। इस तरह का यह पहला विरोध प्रदर्शन था जो सवर्ण जाती की लोगों के लिए असहनीय था। डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी के अथक प्रयत्न के बाद देश के सभी दलितों को अपना अधिकार दिलवाया और जातियवाद मिटा ने का पहला प्रयास सफल हुआ। यह प्रयास डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी ने 1927 को कि या था। इस सत्याग्रह से डॉ. बी आर आंबेडकरजी के जीवन में एक नई दिशा आ गयी थी। 95 साल बाद आज भी दलित सार्वजनिक जगहों से पानी पिने के अधिकार के लिए लढ़ रहे है।

B) मनुस्मृति का दहन:

मनुस्मृति एक ऐसी किताब है, जिसमें कई सारे आरोप उसपर किए जाते है। डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी ने महाड में आयोजित सम्मेलन में मनुस्मृति को जला दिया था। मनुस्मृति एक प्राचीन हिंदू धर्म ग्रंथ है, जिसमें महिला और समाज में जो वंचित वर्ग है उसको लेकर जिसका जो नजरिया उसमें बहुत सारे आक्षेप हुए है। उनका मानना था की " सामाजिक अधिकारों के क्षेत्र मनुस्मृति निकृष्टतम है, सामाजिक अन्याय का कोई भी उदाहरण मनुस्मृति की तुलना में फिका लगेगा।"[1] डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी ने 1927 को मनुस्मृति जलाकर उन्होंने यह बाता दिया कि वह कि सी जाती, धर्म के ग्रंथ को अवैध मानते है।

C) पूना पैक्ट (1932):

पूना पैक्ट 1932 में हुआ एक महत्वपूर्ण समझोता था। जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान डॉ बी. आर. आंबेडकर और महात्मा गांधीजी के बिच हुआ था। यह समझोता मुख्य रूप से दलितों के राजनैतिक प्रतिनिधित्व पर निर्धारित था। महात्मा गांधी जी ने इस मांग का विरोध कि या था। डॉ. बी. आर आंबेडकरजी ने दलितों के लिए अलग निर्वाचन मंडल कि मांग कि थी उसके बाद दलितों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या बढ़ा दि गई थी। पूना पैक्ट ने दलित समुदाय की राजनैतिक भागीदारी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई। यह समझौते से डॉ. बी. आर. आंबेडकर के जीवन का महत्वपूर्ण संघर्ष था।

3) भारत का संविधान और भीमराव आंबेडकर:

हमारे देश का संविधान 29 अगस्त 1947 के दिन डॉ. बी. आर. आंबेडकर और सात अन्य सदस्यों के साथ एक स्वतंत्र भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए नियुक्त कि या गया था। डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी जी को मसौदा समिति के अध्यक्ष पद पर चुना गया था। इस संविधान द्वारा लिखित व्यक्तिगत नागरिकों के लिए कई नागरिक स्वतंत्रता की गारंटी और सुरक्षा प्रदान करता हैं। जिसमें धार्मिक स्वतंत्रता, अछूतों का उन्मूलन और सभी प्रकार के भेदभाव का वि रोध दिखाई देता है। डॉ. बी. आर. आंबेडकर को निश्चित रुप से उनके कई उत्कृष्ट योगदान के कारण भारतीय संविधान के मुख्य वास्तुकार के रूप में जाना गया। "उन्होंने भारतीय संविधान में समानता का नारा ही नहीं दिया अपितु अवसर की समता के साथ पारिस्थितिकी समता भी प्रदान की ओर आगे चलकर दलितों की दयनीय दशा में सुधार लाने हेतू आरक्षण के प्रावधान को सुनिश्चित करने की पहल की।"[2] सामाजिक कृतियों को दूर करने के लिए डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी के प्रयास उच्च कोटि के है। इसी लिए उन्हें भारतीय दलितों का मसीहा कहा जाता है। भारतीय संविधान को 26 नवंबर 1949 को पारित कि या गया और संसद द्वारा अनुमोदन किया गया। उसके बाद संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ, जिसे राष्ट्रीय रूप से गणतंत्र दिवस के रुप में मनाया जाता है।

4) डॉ. आंबेडकर और राष्ट्रवाद :

डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी के एक राष्ट्रवादी थे जिन्होंने वि देश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भारत आकर भारत माँ की सेवा के लिए अपनी संघर्ष यात्रा प्रारंभ कि थी। परंतु दुर्भाग्य यह हुआ की भारत में शासन करनेवालों ने उन्हें वह सन्मान नहीं दिया, जिसके वह हकदार थे। ड्राप्टिंग कमेटी चेरमन के रुप में उन्होंने महत्वपूर्ण भुमिका निभाई थी। अपने जीवन में उन्होंने कितने तिरस्कार, कितने अपमान झेले परंतु इसका प्रभाव संविधान लिखते समय उन्होंने नहीं आने दिया। उन्होंने विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी भारत में रहकर भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाने मे महत्वपूर्ण भुमिका निभाई। संविधान से हमें सिर्फ अधिकार ही नहीं बल्कि एक जीने की आशा भी मिली है। यहाँ उनका सच्चे रूप से राष्ट्रवादी दिखाई देता है ।

5) आंबेडकर जी के बहुमुखी व्यक्तिमत्व:

डॉ. बी. आर. आंबेडकर बहुआयामी व्यक्तिमत्व के धनी थे। वे एक विद्वान, अर्थशास्त्री, सामाजिक, धार्मिक, सुधारक, राजनीति, विज्ञानी और संविधान वेत्ता थे। वे आधुनिक लोकतांत्रिक भारत के महान रचयिताओं में से एक हैं। सामाजिक छुआछूत को मिटाने और मानव अधि कारों की रक्षा के लिए उनके अथक संघर्ष को भुलाया नहीं जा सकता। दरअसल उनके व्यक्तित्व के अनेक आयाम हैं, लेकिन डॉ. बी. आर. आंबेडकर संस्कृति के बारे में क्या सोचते हैं, इसके विषय में चर्चा कि जाएगी।

मेरे विचार में डॉ. बी. आर. आंबेडकर संस्कृत को आधिकारिक भाषा बनाने को लेकर काफी गंभीर थे, क्योंकि वे जान गए थे कि यदि इसे एक बार स्वीकृति मिल गई तो संविधान सभा में आधिकारिक भाषा पर चर्चा के दौरान जो कड़वाहट होगी, वह खत्म हो जाएगी। डॉ. बी. आर. आंबेडकर भारत को भाषाई लड़ाई से मुक्त कर देना चाहते थे। साथ ही वे इस प्राचीन भाषा में मौजूद ज्ञान के भंडार से आम भारतीय को जोड़े रखना चाहते थे। डॉ. बी. आर. आंबेडकर का संस्कृत से लगाव सिर्फ दिखावा नहीं था। आर्य और गैर-आर्य, उच्च और निम्न जातियों के संबंध में यूरोप के सिद्धांतों की सच्चाई जानने की उत्कंठा ने उनमें संस्कृत में रुचि पैदा की थी। इसके लिए उन्होंने वेद सहित कई मौलिक स्रोतों का खुले मन से अध्ययन किया था।

डॉ. बी. आर. आंबेडकर के अनुसार छुआछूत का नस्लीय सिद्धांत न सिर्फ एंथ्रोपोमेट्री के सिद्धांत को नकारता है, बल्कि उसे भारत की संस्कृति , लोगों की नस्ल आदि के बारे में जो तथ्य प्रचलित हैं, उनसे भी बहुत समर्थ नहीं मिलता। डॉ. बी. आर. आंबेडकर के निष्कर्ष अकाट्य हैं, लेकिन दुर्भाग्य से इनकी सबसे अधिक अनदेखी उन्हीं लोगों ने की, जो उनके विचारों पर चलने का जोर-शोर से दावा करते हैं। हमें डॉ. बी. आर. आंबेडकर द्वारा हिंदू समाज के सुधारों को नकारना नहीं चाहिए। उन्होंने संस्कृत को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिए जाने का समर्थन किया था। सड़ी-गली जाति व्यवस्था के वि रोध का साहस दिखाया था। इसके साथ ही हिंदू समाज की दूसरी गलत प्रथाओं का विरोध कि या था।

6) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और बौद्ध धर्म:

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचार आज भी दलित और पिछडे वर्गों के लिए प्रेरणादायी हे। भारत के अस्पृष्यों द्वारा हमेशा के लि ए हिंदू धर्म के अत्याचारों से मुक्त होने के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी ने अथक प्रयत्न कि ए। यदि बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद भी हिंदू हमारे साथ समता, स्वतंत्रता और बंधुता का व्यवहार नहीं करते तो हम उपरोक्त बौद्ध राष्ट्रों का

सहयोग लिए बिना नहीं रहेंगे। हिंदू धर्म के माथे पर अस्पृश्यता का एक भयंकर कलंक लगा है। इसी वजह से परेशान होकर डॉ. आंबेडकर ने 1955 में भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना की और 14 अक्तूबर, 1956 को नागपुर में अपने लाखों समर्थकों के साथ सार्वजनिक समारोह में बौद्ध धर्म ग्रहण कर लि या। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी ने बौद्ध धर्म स्वीकार करके बंधुता और समता का दर्जा प्राप्त करना ही उनका लक्ष था।

7) जातीय व्यवस्था और अस्पृश्यता के खिलाफ:

डॉ. भीमराव आंबेडकरजी ने भारत में जाति य व्यवस्था और अस्पृश्यता के खिलाफ बहुत बड़ी जंग लड़ी थी। उन्होंने जातीय व्यवस्था को एक अमानवीय रुप में देखा। बाबासाहब जब श्रम मंत्री थे तब भी समाज दो वर्गों में बाटा हुआ था। इसका पहिला वर्ग शोषित है और दुसरा शोषक वर्ग है। इस उच्च- निच्चता को हटाने के लिए उन्हें बहुत बढ़ा, संघर्ष करना पड़ा दिखायी देता है। भारत में हर एक गांव में जाति य संबंध पर आंबेडकरजी का दृष्टिकोण व्यापक और सक्षम था। जातीय व्यवस्था केवल श्रम का वि भाजन नहीं है, यह मजदूरों का भी वि भाजन है। इसलिए "डॉ. आंबेडकर भारत में एक ऐसे वर्गहीन समाज की संरचना चाहते थे, जिस में जातिवाद, वर्ग वाद, संप्रदायवाद, तथा ऊँच नीच का भेदभाव न हो और प्रत्येक मनुष्य अपनी योग्यता के अनुसार सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए स्वाभिमान और सम्मान पूर्ण जीवन जी सके।"[3] डॉ. आंबेडकरजी के प्रयास से भारत में जातिय व्यवस्था हैं और अस्पृश्यता को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करने चाहिए।

निष्कर्ष :

डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी का जीवन कार्य समाज को एक संग बनाने के लिए कटिबद्ध था। समाज एक भेदभावपूर्ण सदस्य से लेकर भारत के संविधान के निर्माता तक कि यह यात्रा आनेवाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। न्यायपूर्ण और समतावादी समाज के लिए डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी का दृष्टिकोण राष्ट्र को समता, स्वतंत्रता और आदर्शों की और ले जाएगा। डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी ने दलितों को मदत की और उनको उनका अधिकार दिलवाया जिसके वह हकदार थे। डॉ. बी. आर. आंबेडकरजी ने अपने संघर्ष की शुरवात शिक्षा के माध्यम से की थी। उनका उद्देश भारतीय समाज को जाति गत भेदभाव और छुआ छुत जैसी प्रथाओं से मुक्त करना था। डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी ने दलित व्यवस्था को भारतीय समाज की सबसे बडी बुराई मानी है। आज भी जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता पुरी तरह से समाप्त नहीं हुई है। इसे समाप्त करने के लिए हमें काम करना चाहिए। डॉ. बी. आर. आंबेडकर जी का संघर्ष बहुत बड़ा है। लेकिन जागतिक भेदभाव और छुआ छुत आज भी समाज में स्थित है। उनके विचार हमें सिखाते है की जागतिक भेदभाव समाप्त करने के लिए प्रयास करें। एक भी जाती कभी अलग अलग नहीं रह सकती, वह हमेशा जाति यों के रूप में अस्ति त्व में रही है। डॉ. बी. आर. आंबेडकर जीने जो लढा लढ़े उसका कारण यही था की अस्पृश्यता के खिलाफ जागृति बढ़ानी चाहिए और उनको उनका अधिकार मिलना चाहिए। अगर दलित समाज को न्याय देना हो तो वह हिंदू धर्म में रहकर न्याय नहीं दे सकेंगे क्योंकि हिंदू धर्म में दलितों को निम्न जाती का दर्जा दिया था। इसीलिए ये उन्होंने 1956 को लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म का स्वीकार कि या। दलितों को आज भी समाज में उतना अधि कार नहीं है, जि तना उन्हें देना चाहिए। डॉ. बी. आर आंबेडकरजी के विचार, कार्य, आदर्श आज भी हमारे लिए प्रेरणा दायी है।

संदर्भ ग्रंथ :

1) डॉ. आंबेडकर, शूद्र कौन थे? पृष्ठ 145

2) कुमार डॉ. विवेक, प्रजातंत्र में जाती आरक्षण एवं दलित, सम्यक प्रकाशन, पृष्ठ 132

3)डॉ. जोशी, गोपा, (2006) भारत में स्त्री असमानता, हिंदू माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली वी. वी नई दिल्ली